निवेदन

किसी देश की सबसे बड़ी सम्पदा महापुरुष और धार्मिक ग्रन्थ होते हैं। इन्हीं से जीवन जगत सुधरता, संभलता और आगे बढ़ता है। इस दृष्टि से विश्व में भारत की अपनी अलग पहचान और सम्मान है। महापुरुषों की लम्बी परम्परा में गुरुवर विरजानन्द दण्डी को बड़ी श्रद्धा-सम्मान और उच्चभाव से स्मरण किया जाता है। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के मूल निर्माण तथा संकल्प में गुरु विरजानन्द दण्डी की स्मरणीय एवं ऐतिहासिक भूमिका रही है। उन्होंने स्वामी दयानन्द को आर्ष पठन-पाठन की ओर प्रेरित किया। गुरु की भूमिका को बड़ी सुन्दरता से निभाया। दक्षिणा में भौतिक पदार्थ न मांगकर स्वामी दयानन्द से उनका जीवन ही मांग लिया। उन्होंने स्वामी दयानन्द से कहा वचन दो और संकल्प करो- सत्य सनातन वैदिक धर्म के उद्धार व प्रचार में जीवन लगा दूँगा। संसार में फैले हुए ढ़ोंग, पाखण्ड अज्ञान आदि को हटाने व मिटाने के लिए जीवन भर संधर्ष करता रहूँगा। ऐसे निराले गुरु और शिष्य का मिलन बड़े सौभाग्य से होता है। संसार के इतिहास में यह मिलन की घटना अनूठी व निराली थी।

गुरुवर विरजानन्द दण्डी और स्वामी दयानन्द के प्रथम मिलन के 150 वें वर्ष के उपक्ष्य पर 6-7 एवं 8 नवम्बर 2009 में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मथुरा (उ० प्र०) के ऐतिहासिक समारोह